سلسلة التجويد و القراءات (١)






# كيفية التلّفظ بالحروف القرآنية

## بقبس من القاعدتين البغدادية والنورانية

إعداد
مديحة صالح مهدي
مجازة بالقراءات الصغرى والكبرى
ماجستير قراءات




بسم الله الرحمن الرحيم
(اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ . خَلَقَ
الْإِنسَانَ مِنْ عَلَقٍ . اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ .
الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ . عَلَّمَ الْإِنسَانَ
مَا لَمْ يَعْلَمْ )
العلق (١-٥)

## المقدمة

الحمد لله الذي أنزل على عبده الكتاب ولم يجعل له عوجا , والصلاة والسلام على عبده القائل ( الماهر في القرآن مع السفررة الكرام البررة ) , وعلى آله وصحبه الذين جمعوا القرآن في صدورهم وصحفه المطهرة وبعد :

فإن أنفع الطرق لتعليم المبتدئين والناشئين كيفية التلفظ بالحروف هي ما جاءت به القاعدة البغدادية ، والتي شهد لها المعلمون القائمون بتدريسها منذ زمن طويل, وجاءت بعدها القاعدة النورانية التي طورتها وأخرجتها بنسق جديد ومشوق مما جعلنا من الذين يسعون لتعليمها وانتشارها لفضلها في التعليم بأقل جهد وأسرع وقت ، لذا أخذنا بجمع ما جاء في القاعدتين لكي لا نترك احداهما عن الاخرى ، وبطلب من أحد المشايخ المسؤولين عن تدريس القرآن الكريم . وجزى الله خيرا من سن سنة حسنة , وأجرى عمله خالصا لله تعالى . بغية منفعة طلاب العلم والقرآن .

رغبة منا في الإسهام ولو بجزء بسيط في خدمة كتاب الله تعالى ، آملين أن يستفيد منه طلبة العلم ، راجية منه جل جلاله حسن القبول , وأن يكون عملنا هذا في ميزان حسناتنا يوم القيامة . فإن كان تقصير فمن عند أنفسنا ، وإن كان توفيق فمن الله تعالى وحده , وآخر دعوانا أن الحمد لله رب العالمين .

خادمة القرآن الكريم
مديحة صالح مهدي المطرود
جامعة للقراءات العشر المتواترة
من الشاطبية والدرة والطيبة
والقراءات الشاذة

## الدرس الاول

## حروف الهجاء

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ا | ب | ت | ث | ج | ح |
| الف | با | تا | ثا | جيم | حا |
| •خ | د | ذ | ر | ز | س |
| خا | دال | ذال | را | زا | سين |
| ش | •ص | •ض | •ط | •ظ | ع |
| شين | صاد | ضاد | طا | ظا | عين |
| •غ | ف | •ق | ك | ل | م |
| غين | فا | قاف | كاف | لام | ميم |
| ن | هـ | ء | و | ى | •الحروف المفخمة |
| نون | ها | همزة | واو | يا | |

## الدرس الثاني

## الفتحة والضمة والكسرة

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| أَ | إِ | أُ | بَ | بِ | بُ |
| تَ | تِ | تُ | ثَ | ثِ | ثُ |
| جَ | جِ | جُ | حَ | حِ | حُ |
| خَ | خِ | خُ | دَ | دِ | دُ |
| ذَ | ذِ | ذُ | رَ | رِ | رُ |
| زَ | زِ | زُ | سَ | سِ | سُ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| شَ | شِ | شُ | صَ | صِ | صُ |
| ضَ | ضِ | ضُ | طَ | طِ | طُ |
| ظَ | ظِ | ظُ | عَ | عِ | عُ |
| غَ | غِ | غُ | فَ | فِ | فُ |
| قَ | قِ | قُ | كَ | كِ | كُ |
| لَ | لِ | لُ | مَ | مِ | مُ |
| نَ | نِ | نُ | هَ | هِ | هُ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَ | وِ | وُ | ىَ | يِ | ئُ |

## الدرس الثالث

## تطبيقات على الفتحة

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَ بَ سَ<br>عَبَسَ | أَ مَ رَ<br>أَمَرَ | وَ هَـ بَ<br>وَهَبَ | طَ بَ عَ<br>طَبَعَ |
| دَخَلَ | خَلَقَ | وَعَدَ | سَأَلَ |
| حَسَدَ | فَعَلَ | بَدَأَ | وَقَبَ |
| عَرَضَ | خَسَفَ | أَنَاْ | كَفَرَ |
| غَفَرَ | كَسَبَ | فَحَشَرَ | صَبَرَ |

## الدرس الرابع — تطبيقات على الكسرة

| | | | |
|---|---|---|---|
| بَ خِ لَ<br>بَخِلَ | عَ مِ لَ<br>عَمِلَ | غَ ضِ بَ<br>غَضِبَ | عَ لِ مَ<br>عَلِمَ |
| يَئِسَ | خَشِيَ | سَمِعَ | لَبِثَ |
| أَذِنَ | رَضِيَ | وَسِعَ | حَسِبَ |
| عَلِمَ | شَرِبَ | شَهِدَ | فَطَفِقَ |

## الدرس الخامس — تطبيقات على الضمة

| | | | |
|---|---|---|---|
| نُ فِ خَ<br>نُفِخَ | كُ تِ بَ<br>كُتِبَ | قُ تِ لَ<br>قُتِلَ | ضُ رِ بَ<br>ضُرِبَ |
| هُدِيَ | عُثِرَ | عُفِيَ | نُقِرَ |

## الدرس السادس

# الحروف الهجائية مع التنوين

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ءً | ءٍ | ءٌ | باً | بٍ | بٌ |
| تاً | تٍ | تٌ | ثاً | ثٍ | ثٌ |
| جاً | جٍ | جٌ | حاً | حٍ | حٌ |
| خاً | خٍ | خٌ | داً | دٍ | دٌ |
| ذاً | ذٍ | ذٌ | راً | رٍ | رٌ |
| زاً | زٍ | زٌ | ساً | سٍ | سٌ |
| شاً | شٍ | شٌ | صاً | صٍ | صٌ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ضاً | ضٍ | ضٌ | طاً | طٍ | طٌ |
| ظاً | ظٍ | ظٌ | عاً | عٍ | عٌ |
| غاً | غٍ | غٌ | فاً | فٍ | فٌ |
| قاً | قٍ | قٌ | كاً | كٍ | كٌ |
| لاً | لٍ | لٌ | ماً | مٍ | مٌ |
| ناً | نٍ | نٌ | هاً | هٍ | هٌ |
| واً | وٍ | وٌ | ياً | ىٍ | ىٌ |

## الدرس السابع

## التطبيقات على التنوين المفتوح

| | | | |
|---|---|---|---|
| كِ سَ فاً<br>كِسَفاً | هُـ دًى<br>هُدًى | أَبَ داً<br>أبَداً | سُ دًى<br>سُدًى |
| نَهَراً | سُرُراً | حَرَجْاً | جَنَفاً |
| أَمَداً | كَذِباً | سَفَراً | كُتُباً |

الدرس الثامن

## التطبيقات على التنوين المكسور

| | | | |
|---|---|---|---|
| سُ عُ رٍ | نَ هَـ رٍ | لَ هَـ بٍ | سُ رُ رٍ |
| سُعُرٍ | نَهَرٍ | لَهَبٍ | سُرُرٍ |
| طَبَقٍ | صَدَقَةٍ | قَدَرٍ | صُحُفٍ |
| عَمَدٍ | كَبَدٍ | هُمَزَةٍ | عَلَقٍ |

## الدرس التاسع التطبيقات على التنوين المضموم

| | | | |
|---|---|---|---|
| أ حَ دٌ<br>أَحَدٌ | أ شِ رٌ<br>أَشِرٌ | قَ سَ مٌ<br>قَسَمٌ | حَ رَ جٌ<br>حَرَجٌ |
| عَسِرٌ | غَبَرَةٌ | قَتَرَةٌ | رُسُلٌ |
| كُتُبٌ | بَقَرَةٌ | قَتَرٌ | حُمُرٌ |

## الدرس العاشر حروف المد واللين

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| بَا | بُو | بِى | تَا | تُو | تِى |
| ثَا | ثُو | ثِى | حَا | حُو | حِى |
| خَا | خُو | خِى | دَا | دُو | دِى |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ذَا | ذُو | ذِى | رَا | رُو | رِى |
| زَا | زُو | زِى | سَا | سُو | سِى |
| شَا | شُو | شِى | صَا | صُو | صِى |
| ضَا | ضُو | ضِى | طَا | طُو | طِى |
| ظَا | ظُو | ظِى | عَا | عُو | عِى |
| غَا | غُو | غِى | فَا | فُو | فِى |
| قَا | قُو | قَى | كَا | كُو | كِى |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لَا | لُو | لِى | مَا | مُو | مِى |
| نَا | نُو | نِى | هَا | هُو | هِى |
| وَا | وُو | وِى | يَا | يُو | يِى |

الدرس الحادي عشر

## تطبيقات على حروف المد

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| قَالَ | كَانَ | عَذَابُ | ءامَنَ | عَلِيمٌ |
| كِتَابٍ | حِجَارَةً | تُوبُوا | مَالَهُ | لَسَمِيعٌ |
| غَفُورٌ | خَالِدِينَ | رَأَوْا | حُدُودُ | كِرَاماً |
| نُوحاً | جُوعٍ | طُورٍ | عَظِيمٌ | قَدِيرٌ |

الدرس الثاني عشر

## حروف اللين( الواو والياء الساكنتين المفتوح ما قبلهما)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| بَوْ | بَيْ | تَوْ | تَيْ | ثَوْ | ثَيْ |
| حَوْ | حَيْ | خَوْ | خَيْ | دَوْ | دَيْ |
| ذَوْ | ذَيْ | رَوْ | رَيْ | زَوْ | زَيْ |
| سَوْ | سَيْ | شَوْ | شَيْ | صَوْ | صَيْ |
| ضَوْ | ضَيْ | طَوْ | طَيْ | ظَوْ | ظَيْ |
| عَوْ | عَيْ | غَوْ | غَيْ | فَوْ | فَيْ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| قَوْ | قَىْ | كَوْ | كَىْ | لَوْ | لَىْ |
| مَوْ | مَىْ | نَوْ | نَىْ | هَوْ | هَىْ |
| وَوْ | وَىْ | يَوْ | يَىْ | | |

## الدرس الثالث عشر

## تطبيقات على حروف اللين

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| وَيْلٌ | كَيْفَ | يَوْمِ | شَيْءٍ | إِلَيْهِ |
| ضَيْفِ | لَيْسَ | لَوْحٍ | خَوْفٌ | طَيْراً |
| مَوْجٍ | قَوْلاً | خَيْرٌ | عَيْن | عَلَيْكَ |
| أَيْنَ | مَلَكَيْنِ | عَصَوْا | غَيْرِ | قَوْماً |
| قُرَيْشٍ | مَوْضُوعَة | سَيْراً | مَوْراً | رَيْبَ |
| فَوْزاً | رُوَيْداً | غَيْبَ | عَلَيْهِمُ | كَيْداً |

## الدرس الرابع عشر

## الحروف المقطعة في فواتح السور

| | | | |
|---|---|---|---|
| الٓمٓ | الٓمٓرٰ | الٓمٓصٓ | الٓر |
| نٓ | صٓ | قٓ | طه |
| حمٓ | طسٓ | يسٓ | طسٓمٓ |
| حمٓ عٓسٓقٓ | | كٓهيعٓصٓ | |

## الدرس الخامس عشر

## السكون

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| أَبْ | إِبْ | أُبْ | أَتْ | إِتْ | أُتْ |
| أَثْ | إِثْ | أُثْ | أَجْ | إِجْ | أُجْ |
| أَحْ | إِحْ | أُحْ | أَخْ | إِخْ | أُخْ |
| أَدْ | إِدْ | أُدْ | أَذْ | إِذْ | أُذْ |
| أَرْ | إِرْ | أُرْ | أَزْ | إِزْ | أُزْ |
| أَسْ | إِسْ | أُسْ | أَشْ | إِشْ | أُشْ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| أَصْ | إِصْ | أُصْ | أَضْ | إِضْ | أُضْ |
| أَطْ | إِطْ | أُطْ | أَظْ | إِظْ | أُظْ |
| أَعْ | إِعْ | أُعْ | أَغْ | إِغْ | أُغْ |
| أَفْ | إِفْ | أُفْ | أَقْ | إِقْ | أُقْ |
| أَكْ | إِكْ | أُكْ | أَلْ | إِلْ | أُلْ |
| أَمْ | إِمْ | أُمْ | أَنْ | إِنْ | أُنْ |

- حروف القلقلة (قطب جد)

الدرس السادس عشر

## تطبيقات على السكون

| | | | |
|---|---|---|---|
| يَشْفَعُ | أَنتُمْ | وَلَقَدْ | رِزْقاً |
| أَصْدَقُ | الأَمْرِ | ذَكَرْتَ | فَضْلٍ |
| وَحْدَهُ | تَشْكُرُونَ | أَنْهَكُمَا | أَكْثَرَ |
| مِنْها | أَلَمْ | تَحْتَها | أَعْلَمُ |
| نَشْرَحْ | يُؤْمِنُونَ | أَنفِقُوْا | يُبْصِرُونَ |
| تَجْرِي | تَعْمَلُونَ | جَعَلْنَاه | أَنداداً |
| قَبْلِكَ | وَتُبْ | يَصْلاهَا | أَهْلِ |
| قُلْنَا | عَدْلٍ | قَدْحاً | وَإِنْ كُنْتُمْ |
| الأَرْضَ | زُلْزِلَتِ | بَعْدَ | نَسْتَعِينُ |

## الدرس السابع عشر

# الألف الصغيرة والياء الصغيرة والواو الصغيرة

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ءَا | إِۦ | ءُۥ | بَا | بِۦ | بُۥ |
| تَا | تِۦ | تُۥ | ثَا | ثِۦ | ثُۥ |
| جَا | جِۦ | جُۥ | حَا | حِۦ | حُۥ |
| خَا | خِۦ | خُۥ | دَا | دِۦ | دُۥ |
| ذَا | ذِۦ | ذُۥ | رَا | رِۦ | رُۥ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| زَا | زِي | زُو | سَا | سِي | سُو |
| شَا | شِي | شُو | صَا | صِي | صُو |
| ضَا | ضِي | ضُو | طَا | طِي | طُو |
| ظَا | ظِي | ظُو | عَا | عِي | عُو |
| غَا | غِي | غُو | فَا | فِي | فُو |
| قَا | قِي | قُو | كَا | كِي | كُو |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لَ ا | لِ ے | لُ و | مَ ا | مِ ے | مُ و |
| نَ ا | نِ ے | نُ و | هَ ا | هِ ے | هُ و |

الدرس الثامن عشر تطبيقات على _الألف الصغيرة

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| غِشَٰوَة | عَلَىٰ | وَلَٰكِن | ٱلۡكِتَٰب | أَتَىٰكَ |
| يَٰمُوسَىٰ | أَسۡرَىٰ | أَشۡقَىٰهَا | ٱسۡتَسۡقَىٰ | إِلَٰهًا |
| قَلَىٰ | ذَٰلِك | إِلَىٰ | طَغَىٰ | ضُحَىٰهَا |

الدرس التاسع عشر

## تطبيقات على _الياء

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| بِهِۦ | وَرُسُلِهِۦ | وَزَوْجِهِۦ | بَعْدِهِۦ | لِقَوْمِهِۦ |
| إِۦلَٰفِهِمْ | فَضْلِهِۦ | إِبْرَٰهِۦمَ | بِأَمْرِهِۦ | عِبَادِهِۦ |

الدرس العشرون

## تطبيقات على _الواو الصغيرة

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| وَجْهَهُۥ | وَرَآءَهُۥ | وَرَحْمَتُهُۥ | مَا لَهُۥ | رَبُّهُۥ |
| فَلَهُۥ | أَجْرُهُۥ | أَهْلَهُۥ | فَأَكْرَمَهُۥ | وَنَعَّمَهُۥ |

## الدرس الحادي والعشرون همزة الوصل وتطبيقاتها

| | | | |
|---|---|---|---|
| آ | اِحْفَظُوا | اِسْتُحْفِظُوا | أُعْبُدُوا |
| وَآسْمَعُوا | وَآتْرُكُوا | آِسْتَحَقَ | فَآسْتَبْشِرُوا |
| أُنْصُرُوا | اَنْصِتُوا | اِجْتَبَاهُ | اِبْتِغَاءَ |
| أُحْكُمْ | اِسْتَقَامُوا | اِركَبُوا | اِفْعَلُوا |

## الدرس الثاني والعشرون تطبيقات على حروف المد واللين

مع الهمزة (المد المتصل)

| | | |
|---|---|---|
| شَآءَ | جَآءَ | سَوَآءٌ |
| قُرُوٓءٍ | سُوٓءَ | لَتَنُوٓءُ |

| | | |
|---|---|---|
| ٱلْأَرَآيِك | يَتَسَآءَلُون | تِلْقَآيِ |
| عَآيِلا | صَفْرَآءُ | جَزَآؤُهُم |
| جِآئَ ء | نِسَآءَ | أُوْلَآيِك |
| بَرِيٓءٌ | أَضَآءَ | شُرَكَآيِ |

الدرس الثالث والعشرون

تطبيقات على حروف المد واللين

مع الهمزة (المد المنفصل)

| | | |
|---|---|---|
| إِنِّيٓ أَعْلَمُ | إِنَّآ أَعْطَيْنَاكَ | لَآ أَعْبُدُ |
| هَآأَنتُم | إِلَىٓ أَهْلِهِمُ | هَٰٓؤُلَآءِ |
| إِنِّيٓ أَخَافُ | إِنَّمَآ أَتَّبِعُ | وَمَآ أَدْرَاكَ |

| | | |
|---|---|---|
| يَشَآءُ إِلَىٰ | وَمَآ أُوتِىَ | كَمَآ ءَامَنَ |
| فَلَآ أُقْسِمُ | إِنَّآ أَنذَرْنَـٰكُمْ | بِمَآ أُنزِلَ |
| وَلَآ أَنَا۠ | يَـٰٓأَيُّهَا | أَوْزِعْنِىٓ أَنْ |

## الدرس الرابع والعشرون

## الشدة

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| أَبَّ | أَبِّ | أَبُّ | أَبًّا | أَبٍّ | أَبٌّ |
| إِبَّ | إِبِّ | إِبُّ | إِبًّا | إِبٍّ | إِبٌّ |
| أُبَّ | أُبِّ | أُبُّ | أُبًّا | أُبٍّ | أُبٌّ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| أَتَّ | أَتِّ | أَتُّ | أَتًّا | أَتٍّ | أَتٌّ |
| إِتَّ | إِتِّ | إِتُّ | إِتًّا | إِتٍّ | إِتٌّ |
| أُتَّ | أُتِّ | أُتُّ | أُتًّا | أُتٍّ | أُتٌّ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| أَثَّ | أَثِّ | أَثُّ | أَثًّا | أَثٍّ | أَثٌّ |
| إِثَّ | إِثِّ | إِثُّ | إِثًّا | إِثٍّ | إِثٌّ |
| أُثَّ | أُثِّ | أُثُّ | أُثًّا | أُثٍّ | أُثٌّ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| أَجَّ | أَجِّ | أَجُّ | أَجًّا | أَجٍّ | أَجٌّ |
| إِجَّ | إِجِّ | إِجُّ | إِجًّا | إِجٍّ | إِجٌّ |
| أُجَّ | أُجِّ | أُجُّ | أُجًّا | أُجٍّ | أُجٌّ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| أَمَّ | أَمِّ | أَمُّ | أَمًّا | أَمٍّ | أَمٌّ |
| إِمَّ | إِمِّ | إِمُّ | إِمًّا | إِمٍّ | إِمٌّ |
| أُمَّ | أُمِّ | أُمُّ | أُمًّا | أُمٍّ | أُمٌّ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| أَنَّ | أَنِّ | أَنُّ | أَنًّا | أَنٍّ | أَنٌّ |
| إِنَّ | إِنِّ | إِنُّ | إِنًّا | إِنٍّ | إِنٌّ |
| أُنَّ | أُنِّ | أُنُّ | أُنًّا | أُنٍّ | أُنٌّ |

## الدرس الخامس والعشرون

## تطبيقات على الميم المشددة

| | | | |
|---|---|---|---|
| عَمَّ | مِمَّا | فَلَمَّا | مُحَمَّد |
| حَمَّالَةَ | فَأُمُّهُ | أَمَّا | جَمّاً |
| غَمٍّ | أُمِّيُّونَ | لَمَّا | أَمَّنْ |
| مُحَمَّدٌ | لَمّاً | ثَمَّ | صُمٌّ |

## الدرس السادس والعشرون
## تطبيقات على النون المشددة

| | | | |
|---|---|---|---|
| إِنَّا | إِنَّهُمْ | إِنَّهُ | إِنَّهَا |
| يَظُنُّونَ | النَّاسُ | هُنَّ | كَأَنَّهُنَّ |
| فَذَلِكُنَّ | إِنِّي | إِنَّمَا | لِجَهَنَّمَ |
| إِنَّكُمْ | أَنَّهُمَا | لَيَبْعَثَنَّ | عَلَيْهِنَّ |

## الدرس السابع والعشرون
## اللام المشددة

| | | | |
|---|---|---|---|
| اَلَّا | بَلَّا | تَلَّا | ثَلَّا |
| جَلَّا | حَلَّا | خَلَّا | دَلَّا |
| ذَلَّا | رَلَّا | زَلَّا | سَلَّا |
| شَلَّا | صَلَّا | ضَلَّا | طَلَّا |
| ظَلَّا | عَلَّا | غَلَّا | فَلَّا |
| قَلَّا | كَلَّا | لَلَّا | مَلَّا |
| نِلَّا | وَلَّا | هَلَّا | يَلَّا |

## الدرس الثامن والعشرون
## تطبيقات على اللام المشددة

| | | | |
|---|---|---|---|
| اللّٰهُ | لِلّٰهِ | فَكُلّاً أَخَذْنَا | جِبِلّاً |
| غِلّاً | حِلّاً | كُلَّمَا | الَّذِين |
| الَّتِي | لَعَلَّكُمْ | وَظَلَّلْنَا | وَأَنزَلْنَا |
| وَضَلَّ | كَلٌّ | عَلَّمْتَنَا | ضَالّاً |

## الدرس التاسع والعشرون
## تطبيقات على ما سبق

| | | | |
|---|---|---|---|
| ءَامَنَّا | أُمَّةٌ | ٱلسَّمِيع | نُفَرِّقُ |
| تَرَدَّىٰٓ | كَذَّبَ | تَلَظَّى | يَتَزَكَّىٰ |
| صَدَّق | ٱلزَّيْتُون | عَشِيَّةً | دَكًّا _ حِجٌّ |
| رَبِّك | كَلَّا | تَنَزَّل | ٱلتَّوَّاب |

| | | | |
|---|---|---|---|
| أَعِزَّةٍ | أَشَدِّ | ٱلنَّاس | ٱلرَّبَّنِيُّون |
| فَسَوَّىٰهَا | وَٱلتِّينِ | أَيَّان | وَبُرِّزَت |
| ٱلنَّبِيِّـۧن | فَٱطَّهَّرُوا | كَرَّةً | يُعَذِّبُ |
| وَدَّعَك | ٱلشَّمْس | ذُرِّيَّةً | طَيِّبَةً |

الدرس الثلاثون تطبيقات على الشدة والسكون مع المد

| | | |
|---|---|---|
| وَٱلَّـٰٓئِى | فَإِذَا جَآءَتِ ٱلطَّآمَّةُ | وَحَآجَّهُۥ |
| يَـٰٓأَيُّهَا | هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ | ٱلسَّمَآء |
| حَآجُّوك | وَلَا ٱلضَّآلِّينَ | أَتُحَـٰٓجُّوٓنِّى |
| وَلَا جَآنٌّ | إِنَّا لَضَآلُّونَ | ءَآلْـَٔـٰنَ |

## الدرس الحادي والثلاثون

## التطبيقات على ما سبق دراسته

ٱلَّذِينَ ءَاتَيْنَٰهُمُ ٱلْكِتَٰبَ يَتْلُونَهُۥ حَقَّ

تِلَاوَتِهِۦٓ أُوْلَٰٓئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِۦ

ءَآلْـَٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ

وَإِذَا جَآءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ ٱللَّهُ

فَإِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

| |
|---|
| أَفَغَيْرَ ٱللَّهِ أَبْتَغِى حَكَمًا وَهُوَ ٱلَّذِىٓ أَنزَلَ إِلَيْكُمُ ٱلْكِتَٰبَ مُفَصَّلًاۚ |
| فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنۢبَثًّا |
| فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ |
| وَقَدْ أَنزَلْنَآ ءَايَٰتٍۭ بَيِّنَٰتٍ |
| رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا۟ |

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيۡهِ ٱلَّيۡلُ رَءَا كَوۡكَبًا

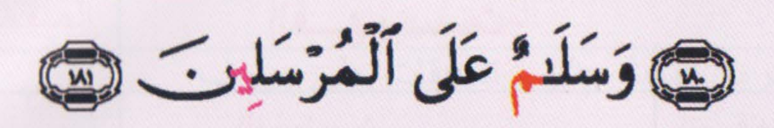
وَدَّت طَّآئِفَةٞ مِّنۡ أَهۡلِ ٱلۡكِتَٰبِ لَوۡ

يُضِلُّونَكُمۡ

وَتَمَّتۡ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدۡقٗا وَعَدۡلٗاۚ لَّا

مُبَدِّلَ لِكَلِمَٰتِهِۦۚ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡعَلِيمُ

سُبۡحَٰنَ رَبِّكَ رَبِّ ٱلۡعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ



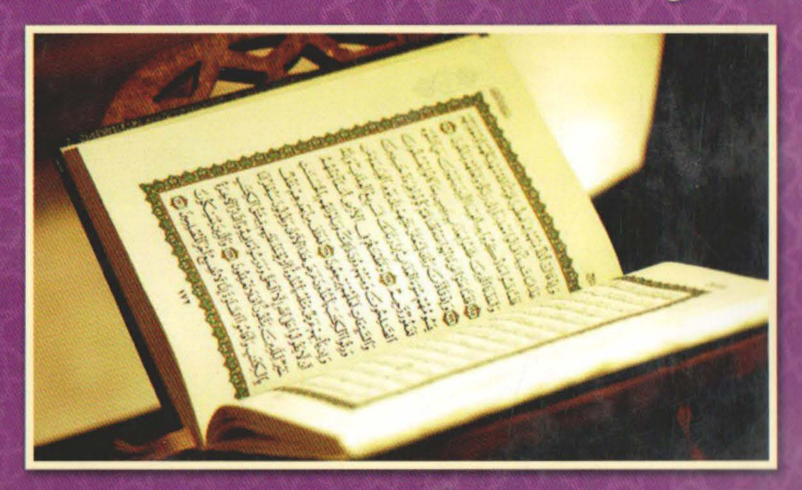

وَٱلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ١٨٢

## تمت بحمده تعالى

# الفهرست

رقم الايداع في دار الكتب
والوثائق ببغداد ١٩٥١ لسنة ٢٠١٢
الطبعة الثانية
١٤٣٤ هـ - ٢٠١٢ م

## اول خطوة لتعلم قراءة القرآن الكريم
## بأسرع طريقة وبأقل جهد للحلقات القرآنية






00964 770 6521662
mahweeshop@yahoo.com